Vijay Kumar Jha
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar

Degree part III

Paper - VI

Social and religious movement in India in 19th Century.

19वीं शताब्दी समस्त एशिया के इतिहास में महत्वपूर्ण युग माना जाता है। इस युग में प्रायः समस्त एशियाई देशों में राजनीतिक, धार्मिक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परिवर्तन हुये। एशिया के इतिहास में इस युग को नवजागरण काल कहा गया है। इस नवजागरण से भारत भी अछूता नहीं रहा। भारत में भी धार्मिक, राजनीतिक, बौद्धिक साहित्यिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में असाधारण प्रगति हुई तथा धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलन हुये। यों तो भारत में 15वीं सदी में ही धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन प्रारम्भ हो गये थे किन्तु 18वीं सदी के राजनीतिक अस्थिरता के कारण आन्दोलन मृतप्राय हो गया था। धर्म, रूढ़ि परम्परा के कठोर बंधनों में समाज जकड़ चुका था। उच्च आदर्शों का घोर अभाव था। समाज में सती प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, बाल हत्या, जात-पात का भेद भाव, छुआछूत, परदा प्रथा जैसे बुरी प्रथायें समाज में फैल गई थी। जिस कारण 18वीं सदी को भारत के इतिहास में अंधकार पूर्ण युग कहा जाता है।

उन्नीसवीं सदी में भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में नवचेतना का संचार हुआ जिससे नवीन चेतना का संचार हुआ जो भारत के समाज, धर्म, साहित्य आदि को प्रभावित किया। इस नवचेतना को हम भारतीय पुनर्जागरण आन्दोलन के नाम से जानते हैं। इस नवचेतना के कारण ही भारत में ~~सामा~~ सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन चला था।

1: 19वीं सदी में भारत में जो सुधारवादी आन्दोलन

Scanned with Cam

चला। उसका प्रारम्भ बंगाल प्रेसिडेंसी से प्रारम्भ हुआ।

Causes :-

(1) पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव :- अंग्रेजो के प्रभाव से भारत पाश्चात्य सभ्यता से अवगत हुआ जिससे भारतीयों में सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में नवचेतना का संचार हुआ। सर्वाधिक फायदा भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से हुआ। इस भाषा के माध्यम से भारतीय यूरप के उदारवादी विचार धारा से परिचित हुआ। भारतीयों में अंध विश्वास हटने लगा तथा तर्क की कसौटी पर आंकलन होने लगा।

(2) इसाई पादरीयों का धर्म प्रचार :- अंग्रेजों के साथ इसाई पादरी भी भारत अपने धर्म प्रचार के आने लगे तथा वे भारतीय समाज और धर्म कि आलोचना करते थे। इससे कट्टर हिन्दुओं कि आंखे खुली और अपने धर्म कि वाह्याडम्बर तथा रूढ़िवादिता को हटाना चाहते थे कि वे आलोचना के पात्र नहीं बने। इसके लिये धर्म एवं समाज में परिवर्तन लाना आवश्यक था। अतः भारतीय इसाई से प्रेरणा ग्रहण किया।

(3) धर्मसुधारकों का प्रादुर्भाव :- लेकिन कोई भी आन्दोलन बिना विशेष विभूतियों के संभव नहीं होता है। सौभाग्यवश 19वीं सदी में अनेक ऐसी महान विभूतियों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने इस आन्दोलन का सफल नेतृत्व प्रदान किया। इनमें राजा राम मोहन राय, केशव चन्द्र सेन, देवेन्द्र नाथ ठाकुर, महर्षि दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द का नाम अग्रणी है। उन्होंने प्राचीन भारतीय विचारों को नये युग के सन्दर्भ में विवेचना किया और भारतीय रीति, रिवाज, मान्यताओं के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

(4) बंगाल एशियाटिक कि स्थापना :- 1784 ई० में सर विलियम जोन्स द्वारा बंगाल में Asiatic Society कि स्थापना किया। कई यूरोपीय, फ्रांसीसी, स्पेनिश विद्वान ने प्रमाणित किया कि संस्कृत, यूनानी तथा लैटिन भाषाएं संगोत्र है। कोलब्रुक ने भारतीय संस्कृत, गणित, ज्योतिष के भारतीय विचारकों के साथ यूरोपीय विचारकों का [illegible]

Sunday 03
FEBRUARY 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa
1 2
3 4 5 6 7 8 9
10 11 12 13 14 15 16
17 18 19 20 21 22 23
24 25 26 27 28
FEB

विश्लेषण किया। भारतीयों को अपने गौरव का ज्ञान हुआ। जर्मन महाकवि गेटे ने कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् को पृथ्वी और स्वर्ग के माधुर्य का सार कहा।

(5) विचारों के आदान-प्रदान की सुविधा :— यातायात के साधनों तथा समाचार पत्रों के प्रकाशन से भारतीयों को अपने विचार आदान-प्रदान में सुविधा मिली। फलतः लोग अपने विचार एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच कर या समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचारित करने लगे।

(6) नवजागरण का प्रभाव :— पाश्चात्य उदारवादियों के प्रभाव से भारतीय परम्पराओं, रूढ़ियों, अंधविश्वासों पर गहरी चोट पहुँची और सुधार की प्रेरणा मिली।

अब बाल विवाह, दुराचार, बालहत्या, सती प्रथा जैसे अंधविश्वासों से लोग उबरना चाहते थे। कुछ संस्थायें जैसे ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, राम कृष्ण मिशन जैसी संस्था ने धर्म सुधार आन्दोलन का बीड़ा उठाया। इन संस्थाओं ने भारत में प्रचलित प्राचीन मान्यता एवं रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का विरोध किया तथा विधवा विवाह, नारी शिक्षा, अंतर्जातीय आदि का समर्थन किया। समाज सुधार के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये आंग्ल विद्यालयों, कालेजों, पुस्तकालयों आदि की स्थापना हुई।

(7) मध्यमवर्ग का उदय :— नवजागरण, पाश्चात्य शिक्षा के फलस्वरूप 19 सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में मध्यम वर्ग का जन्म हुआ। इस वर्ग के लोग शिक्षित एवं प्रबुद्ध थे तथा इन्हीं लोगों ने धर्म सुधार तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का व्रत लिया।

इस नवजागरण ने भारतीय समाज की जड़ता को समाप्त किया तथा बहुमुखी प्रगति का मार्ग दिखाया। इस आन्दोलन ने ~~[illegible]~~ चिन्तन की धारा और दृष्टिकोण

बदल दिया। धार्मिक सुधार आंदोलन आगे चलकर सामाजिक सुधार आन्दोलन से जुड़ गया। जिससे राष्ट्रीयता एक नवीन धर्म के रूप में उदित हुआ। सुधार आंदोलन की सर्वोपरि उपलब्धि यह थी कि इसने भारतीयों कि समानता, स्वतंत्रता एवं जागरण का संदेश एक ऐसे समय पर दिया जब देश गुलामी कि बेड़ियों में जकड़ा था और समस्त जनजीवन विश्वास अंधविश्वास, रुढ़िवादिता एवं अज्ञान के अंधकार में भटक रहा था।

धार्मिक सुधार आन्दोलनों के कारण हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान हुआ। हिन्दू धर्म में व्याप्त बहुदेववाद, कर्मकांड, रूढ़िवादिता, पुरोहितवाद, मूर्ति पूजा आदि का उन्मूलन होने लगा तथा सभी धर्मों की मूलभूत एकता स्थापित हुई, धार्मिक बाह्य आडम्बर समाप्त होने लगा तथा धार्मिक सहिष्णुता की भावना जागृत हुई।